अमर उजाला साहित्य
Friday, April 13, 2012 | Last Update - 2:19 PM IST
Story Update : Saturday, February 18, 2012 10:48 PM

पौराणिक कथानकों या कथानकों की तरह लिखे जाने वाले उपन्यासों की खासियत यह समझी जाती है कि उनकी भाषा शैली तत्सम, प्रांजल और संस्कृतनिष्ठ होनी चाहिए। इस विशेषता का निर्वाह करते हुए रचे गए कथानक ही शायद उस वातावरण की रचना करते हैं, जो काशी मरणान्मुक्ति में दिखाई देता है। मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ के इस उपन्यास में मुख्य रूप से शिवपुराण और गौण रूप से दूसरे पुराणों के प्रसंगों के आधार पर कहानी बुनी गई है। इसमें यथार्थ, कल्पना, मिथ, इतिहास, योग और तंत्र की झलक भी जहां-तहां मिलती है।

लेखक मनोज ठक्कर का कहना है कि इस उपन्यास की रचना उन्होंने स्वयं नहीं की, बल्कि ध्यान या समाधि की अवस्था में एक खास समय पर यह कथानक और शिल्प अवतरित होता था। उस अवस्था में कहानी जिस भाषा शैली या संदेश के साथ दिखाई देती थी, उसे इसी रूप में लिख दिया। यह दावा उपन्यास के तत्सम रूप को स्वाभाविक ठहराता है। लेकिन इसके अध्ययन में लगने वाला परिश्रम इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि भाषा को थोड़ा और प्रांजल और सरल रखा जाता, तो संदेश अधिक बोधगम्य हो सकता था। दुरूह शब्दों और लंबे वाक्यों में प्रतिपादन उलझ कर रह गया है। कथानक भी रुक-रुक कर आगे बढ़ता है। और बीच-बीच में लुप्त हो जाता है।

कथानायक महामृणंगम या 'महा' की कहानी कबीरदास की जीवनी की तरह शुरू होती है। यशोदा और राघव को फाफामऊ के श्मशान में एक नवजात शिशु मिलता है। उस बच्चे को पाकर यशोदा निहाल हो जाती है। क्योंकि वह निस्संतान है। राघव को भी जीने का मकसद मिलता है। पर उसकी जिंदगी में एक मकसद पहले से हावी है। और वही प्रधान है। पिता शराबी है और बच्चे के कुछ बसंत देख लेने के बाद अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। उसके बाद यशोदा के जीवन में महा के सिवा कुछ नहीं बचता।

अमर उजाला साहित्य
Friday, April 13, 2012 | Last Update - 3:39 PM IST

शैशव अवस्था में ही महा अपनी गतिविधियों से आभास करने लगता है कि इस जन्म में वह मुक्ति प्राप्त करने के लिए ही आया है। वह इस दुनिया का नहीं आध्यात्मिक जगत का जीव है। इसलिए महाकर्णिका महाश्मशान की ओर आकर्षित होता और वहां के परिवेश प्रभाव में डूबता -उतराता रहता है। इस महाश्मशान में चांडाल कर्म करने वाले बाबा भूतनाथ, महा को शिक्षित संस्कारित करते रहे हैं। जिन्हें महा चाचा भी कहता है, वे गुरु की भूमिका में हैं, लेकिन वे कहते हैं कि मैं तेरा गुरु नहीं हूं। महा के जीवन में और दूसरे योगी सिद्धों का भी प्रवेश होता है, लेकिन वे भी यह कह कर हट जाते हैं कि मैं तेरा गुरु नहीं हूं।

महा का जीवन या साधना गुरु कभी कबीर की तरह और कभी तुलसी की तरह। इसी क्रम में राजा हरिश्चंद्र, काशी बसाने वाले राजा दिवोदास आदि पौराणिक चरित्रों के कथा प्रसंग आते हैं। और अंत में महा एक नए जीवन दीप की रक्षा करके उस पर फेंके गए मृत्यु के कालपाश को अपने गले में पहन लेता है। कथानक इस शिखर पर पहुंच कर संपन्न होता है कि योग और भक्ति का साधन करते हुए प्रत्येक व्यक्ति काशी में मोक्ष प्राप्त करता है। साधन ही नहीं उसका संकल्प भी साधक को आत्मदर्शन करा देता है। उपन्यास की कहानी बहुत छोटी सी है।

पौराणिक संदर्भ, भक्ति साहित्य, द्वादश ज्योतिर्लिंग और इतिहास भूगोल के विवरण कथानक को आगे बढ़ाते हैं। इसे पढ़ने और ग्रहण करने के लिए धैर्य और निरंतरता की जरूरत है।

काशी मरणान्मुक्ति,
मनोज ठक्कर,
रश्मि छाजेड़,
शिवओम साईं प्रकाशन, इंदौर,
मूल्य : 500 रुपये